उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र
दिगंत - भाग - 2 - गद्य खण्ड

Date डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० महा वि० खुलखुना
09/06/21

शीर्षक - 'बातचीत'
लेखक - बालकृष्ण भट्ट

प्रश्न :- 'बातचीत' शीर्षक निबंध का सारांश लिखें।

उत्तर :- 'बातचीत' शीर्षक ललित निबंध महान निबंधकार और आलोचक बालकृष्ण भट्ट की रचना है। यह निबंध उनके निबंधकार व्यक्तित्व और निबंध कला के साथ-साथ भाषा-शैली का भी प्रतिनिधित्व करता है।

ईश्वर द्वारा प्रदत्त, शक्तियों में वाक्शक्ति मनुष्य के लिए वरदान है। बातचीत में वक्ता को नाज-नखरा का मौका नहीं मिलता परन्तु वक्तृता में चुटीली बात वक्ता को लाना पड़ता है जिससे करतल ध्वनि अवश्य हो। बातचीत, जहाँ दो आदमी का प्रेमपूर्वक संलाप है, वहीं स्पीच का उद्देश्य श्रोता में जोश पैदा करना होता है।

जिन्दगी को मजेदार बनाने के लिए ~~बात~~ बातचीत सारगर्भित तत्व है। बातचीत से चित्त हल्का और स्वच्छ होता है। उसे लेखक ने राम-रमौवल की संज्ञा दी है। रॉबिंसन क्रूसो 16 वर्ष कुत्ता, बिल्ली आदि जानवरों के बीच रहने के उपरांत फ्राइडे के मुख से मनुष्य की बोली सुनकर आनन्द विभोर हो गया। मनुष्य का गुण-दोष प्रकट करने के लिए बातचीत आवश्यक है। बेन-जानसन के अनुसार, " बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है, जो सर्वथा उचित है।" एडीसन के अनुसार- "असल बातचीत सिर्फ दो व्यक्तियों में हो सकती है, जिसका तात्पर्य यह हुआ कि जब दो आदमी होते हैं तभी एक-दूसरे के सामने अपना दिल खोलते हैं। तीसरे की उपस्थिति मात्र से ही बातचीत की धारा बदल जाती है।" बातचीत में जब चार व्यक्ति लग जाते हैं तो बातचीत का कोई औचित्य नहीं रह जाता है।

बातचीत के लिए दो पक्षों की उपस्थिति लाजिमी है। बातचीत होने के लिए एक-दूसरे के पास आने-जाने में शिष्टाचार की त्रुटि हो सकती है। लेखक के अनुसार

शेष आगे -

'निर्मला' उपन्यास
लेखक- मुंशी प्रेमचन्द
शास्त्री प्रथम खण्ड
अ० द्वि०-पत्र-राष्ट्रभाषा हिन्दी

प्रश्नोत्तर

डॉ० देव परण प्रसाद
एसो०प्रो० हिन्दी
श्रीके०सं० महाविद्यालय
सुखसेनी, पूर्णिया
09/06/21

प्रश्न:. मुंगी का चरित्र-चित्रण करते हुए कथानक में उसकी स्थिति का महत्व बतलाइये।

उत्तर:— 'मुंगी' निर्मला उपन्यास की एक महत्वपूर्ण नारी पात्र है। उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द ने कथानक में 'मुंगी' की भूमिका को काफी महत्वपूर्ण बना दिया है। 'मुंगी' मुंशी तोताराम वकील के घर की नौकरानी है। आर्थिक तंगी में अन्य नौकरों को निकाल दिये जाने पर भी 'मुंगी' अपने काम पर बनी हुई रहती है। मुंगी अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। निर्मला 'मुंगी' को बार-बार मंसाराम के पास भेजकर उसकी कुशलता जानती रहती है।

मुंगी की स्थिति नायिका निर्मला की संवेदना उभारने काफी सहायक है। निर्मला और मुंगी का निम्न कथोपकथन मुंगी की स्थिति को और स्पष्ट कर देता है—

निर्मला ने पूछा - पहले से कुछ हरे हैं री?

मुंगी - हरे-वरे तो नहीं हुए और सूख गये हैं।

निर्मला - क्या जी अच्छा नहीं?

इस प्रकार कथानक में निर्मला और मुंगी के मध्य निरन्तर बात-चीत होती है। 'मुंगी' निर्मला से कहती है कि वहाँ का कहार कह रहा था कि बाबू का खुराक बहुत कम है। हरदम पढ़ते रहते हैं। निर्मला जब भी मुंगी से कुछ पूछना चाहती है तो वह बार-बार कहती है - झूठ क्यों बोलूँ। यह कहकर अपनी बात वह शुरू करती है।

निर्मला मुंगी से पूछती है कि बाबू क्यों नहीं आये। कल तो विद्यालय में छुट्टी थी। तो मुंगी कहती है बाबू जी यह पूछने के लिए ध्यान में ही नहीं आया।

शेष आगे —

पुनः मुंशी कहती है बहुजी बाबूजी कह रहे थे कि अब मेरा जीना धिक्कार है। यह कहकर बहुत रोने लगे। 'निर्मला' मंसाराम के भावों को समझ गयी। वह मन ही मन सोचने लगी कि कहीं न कहीं बाबूजी के सन्देह का ज्ञान उन्हें हो गया है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि 'मुंगी' का का चरित्र अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। उसकी भूमिका निर्मला के चरित्र-विकास में काफी सहायक सिद्ध हुई है।

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र
निबंधमाला – गद्य भाग
शीर्षक :– 'पेट'
लेखक – पंडित प्रताप नारायण मिश्र

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० ड० स० महा वि०
सुखसेना, पूर्णियाँ
09/06/21

प्रश्न :– 'पेट' शीर्षक निबंध का महत्व स्पष्ट करें।

उत्तर :– निबंधकार पंडित प्रताप नारायण मिश्र ने 'पेट' शीर्षक निबंध के माध्यम से कई महत्वपूर्ण तथ्यों को पाठकों के समक्ष रखा है। उनका कहना है कि पेट की महिमा अपरम्पार है। पेट पिण्ड से लेकर ब्रह्माण्ड तक को नियंत्रित करता है। पेट की इसी महत्ता को स्वीकार करते हुए भगवान श्रीकृष्ण ने अपना नाम दामोदर रखा था। पेट की सुन्दरता के कारण ही प्राचीनकाल में सुन्दरियाँ कृशोदरी कहलाती थी।

लेखक के कथनानुसार पेट की आँच बड़ी कड़ी होती है। इसे सहना बहुत कठिन है। अथक परिश्रम के बाद भी पेट का जुगाड़ न हो सके तो यह क्षुधा-यन्त्र नर्क का रूप धारण कर लेता है। इस पेट को भरने के लिए ही लोग देश-विदेश भटकते रहते हैं। परिवार के सदस्यों का पेट भरने के लिए ही हजारों लोग पलायन करने के लिए विवश हो जाते हैं।

इस देश में ऐसे लोग की भी कमी नहीं है जो दूसरों के पेट पर लात मारकर तरह-तरह के तिकड़म और धोखे से ढेर सारा धन अर्जित कर लेते हैं। इनका पेट कभी नहीं भरता है। बिना डकार लिए सब कुछ हजम कर जाते हैं। ये दूसरे को कुछ भी देने को तैयार नहीं होते हैं। लगता है जैसे इनका ही पेट सबसे बड़ा है।

ठगी और बेईमानी से धन एकत्रा करने वाले कंजूसों को लेखक महोदय चेतावनी भी देते हैं। वे कहते हैं केवल धन बटोर कर उसे अपने ही स्वार्थ में जमा करते जाना कभी भी हितकर नहीं है। धनवानों को चाहिए कि वे दूसरों में भी उसे बाँटे। अन्यथा सम्भव है कि एक दिन ऐसी आग भड़केगी कि किसी को भी जलाये बिना नहीं छोड़ेगी।

धार्मिक दृष्टिकोण से भी पेट का काफी महत्व है। माताएँ अपनी संततियों को नौ मास अपने पेट में ढोती हैं, इसलिए धरती पर इनसे अधिक पूज्य दूसरा कोई देवी-देवता नहीं है।

इस प्रकार मिश्रजी कहना है कि जिनके पास

शेष आगे –

Date: _____ Page: _____

अपने आप बात करने की शक्ति पैदा करना सबसे उत्तम प्रकार की बातचीत है।

वाक्शक्ति को दमन करने से अनेकों प्रकार का दमन हो जाता है। ऐसा नहीं होने पर जिह्वारूपी ~~कतरनी~~ कतरनी क्रोधाग्नि को भड़काकर अजेय को भी अपने आगोश में समेट लेती है। निष्कर्षतः मौन की साधना का साधक बनकर अपने आप से बातचीत करना सभी साधनों का मूल है, शक्ति परम पूज्य मन्दिर है, परमार्थ का एकमात्र सोपान है।

Date _____ Page _____

सामर्थ्य हो वह सब कुछ अपने ही न हजम कर जाँय।
थोड़ा बहुत दूसरों को भी दें और अपने तथा अपनों की
परवरिश के लिए जीवन भर संघर्ष करें। ऐसा करने से ही
समाज में सरलता बनी रहेगी।